दादा भगवान परिवार का

नवम्बर २०२०

शुल्क प्रति नकल : ₹ २०/-

अक्रम एक्सप्रेस

अक्रम एक्सप्रेस

झगड़ा

वर्ष : ८ अंक : ७
अखंड क्रमांक : ९२
नवम्बर २०२०

संपर्क सूत्र
बालविज्ञान विभाग
त्रिमंदिर संकुल, सीमंधर सिटी,
अहमदाबाद - कलोल हाइवे,
मु.पो. - अडालज,
जिला . गांधीनगर - ३८२४२१, गुजरात
फोन : (०७९) ३९८३०१००
email:akramexpress@dadabhagwan.org
Website: kids.dadabhagwan.org

संपादकीय

बालमित्रों,

लड़ाई-झगड़ा किसे कहते हैं, यह तो किसे पता नहीं होगा? आस-पास जहाँ देखें वहाँ किसी न किसी के छोटे-बड़े झगड़े होते ही रहते हैं! पूरे दिन में हमारा भी किसी न किसी के साथ झगड़ा होता ही रहता है! कई बार तो पता भी नहीं चलता और झगड़ा हो जाता है। ऐसा होता न दोस्तों?

तो आओ, इस अंक में दादा की दृष्टि से झगड़े मिटाने के और झगड़े से बचने के उपाय जानें और तय करें कि किसी भी बात के लिए झगड़ा करने के बजाय समाधान से ही हल लाएँ।

-डिम्पल मेहता

Editor : Dimple Mehta

Printer & Published by

Dimple Mehta on behalf of
Mahavideh Foundation
Simandhar City, Adalaj - 382421,
Ta & Dist - Gandhinagar.

Owned by
Mahavideh Foundation
Simandhar City, Adalaj - 382421,
Ta & Dist - Gandhinagar.

Printed at
Amba Offset
B-99, GIDC, Sector-25,
Gandhinagar - 382025.

Published at
Mahavideh Foundation
Simandhar City, Adalaj - 382421,
Ta & Dist-Gandhinagar.

© 2020, Dada Bhagwan Foundation
All Rights Reserved

प्रश्नकर्ता : यदि फ्रेंड के साथ झगड़ा हो जाता है तो जब भी वह सामने आता है, तब ऐसा भाव होता है कि उसे पकड़कर बहुत मारूँ!

पूज्यश्री : तो तुम्हें क्या लगता है कि उसे मारने के बाद वह क्या करेगा?

प्रश्नकर्ता : वह भी मारेगा।

पूज्यश्री : तो दोनों सुखी होंगे या दुःखी होंगे?

प्रश्नकर्ता : दोनों दुःखी होंगे।

ज्ञानी कहते हैं..

पूज्यश्री : तो हमें क्या करना चाहिए? दिवाली पर फ़र्स्ट क्लास मिठाई का पैकेट, गूंजा, घारी, नमकीन मिक्स और मठिया ऐसा कोई छोटा सा पैकेट ले कर, "तु मेरा बेस्ट फ्रेंड है, हैपी दिवाली, हैपी न्यु ईयर" कहकर उसे विश करना और फिर उससे माँफी माँगना कि "सॉरी, मेरी भूल हो गई। आज से हम वापस फ्रेंड बन जाते हैं।" कर सकते हैं या नहीं?

प्रश्नकर्ता : कर सकते हैं।

पूज्यश्री : करके देखना न! उसे भी अंदर दुःख होता होगा कि मैंने अपना दोस्त खो दिया। मुझे खोना नहीं है। और हमें थोड़ा एडजेस्टमेंट ले लेना चाहिए! यदि वह किसी दिन चिढ़ जाए तो हमें नहीं चिढ़ना चाहिए। वह काम नहीं करे तो हमें दुःखी नहीं होना चाहिए। हमें समझना चाहिए कि उसके संयोग बदल गए हैं। लेकिन मैं तो उसके साथ बेस्ट फ्रेंडशिप ही रखूँगा।

प्रश्नकर्ता : ठीक है।

यह तो नई

जो व्यक्ति आनंद से रहता है
वह कभी झगड़ा नहीं करता।
जलने वाला व्यक्ति झगड़ा
करता है।

बोलकर झगड़ा किया यानी हमने किसी
से कुछ बोला तो वह भी हमें कुछ बोलेगा
या मारेगा। उसका फल तुरंत मिल जाता है।
लेकिन यदि मन से झगड़ा करेंगे तो
उसका फल अगले जन्म में मिलेगा।
इसलिए मन से गुस्सा करने पर
प्रतिक्रमण कर लेना चाहिए।

बुद्धिशाली तो वह कहलाता है कि जहाँ जाए, वहाँ आनंद का वातावरण बना दे। यह तो कम बुद्धि वाले झगड़ा करते हैं।

ही बात है!

यदि हम एडजेस्ट हो जाएँगे तो कभी किसी के साथ झगड़ा ही नहीं होगा।

हार में रही जीत

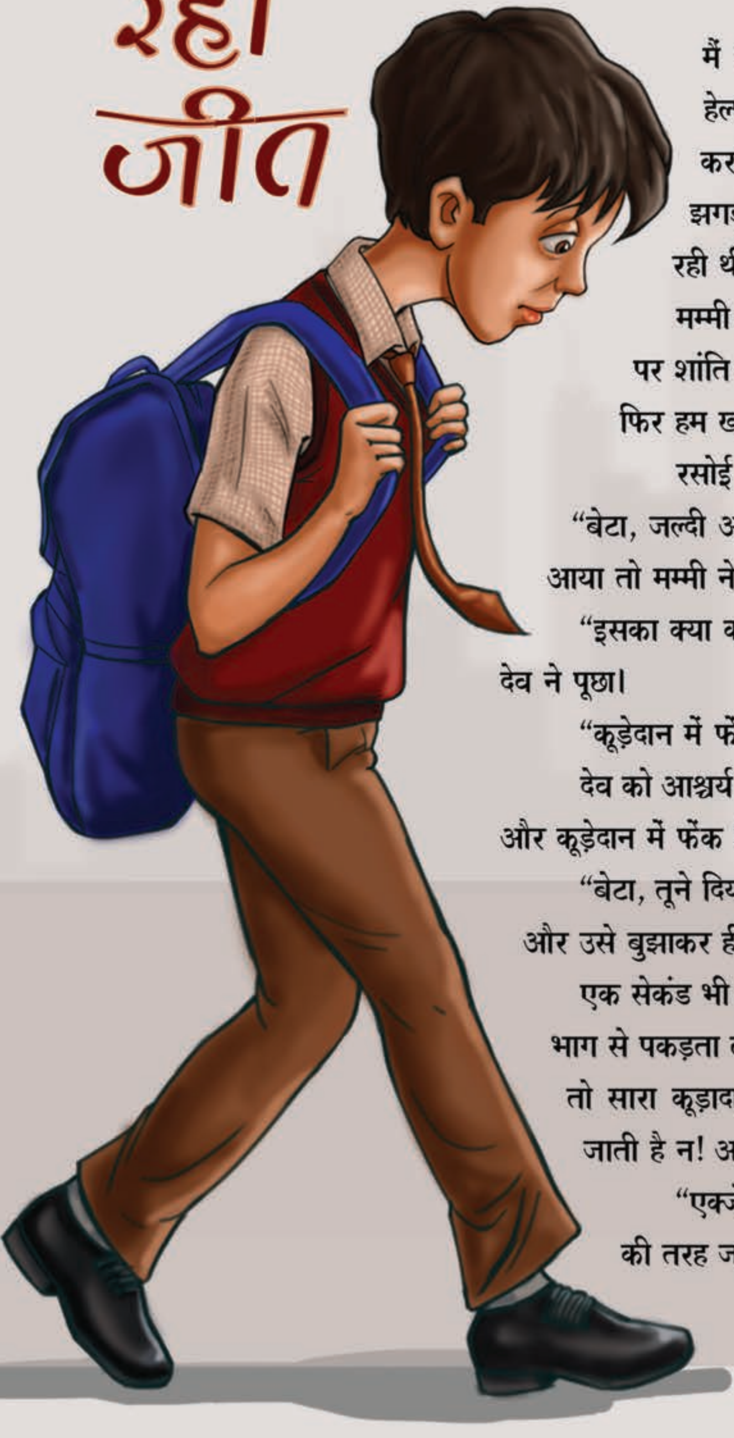

देव मुँह लटकाकर स्कूल बस से नीचे उतरा और घर की ओर जाने लगा। वह गम्भीर था।

मम्मी ने पूछा, "क्या हुआ बेटा, आज क्यों चेहरा इतना उतरा हुआ है?"

"मम्मी, आज से वीर मेरा फ्रेंड नहीं है। मैं हमेशा उसकी हेल्प करता हूँ। आज मुझे हेल्प करने की उसकी बारी आई तो उसने मना कर दिया। इसलिए मेरा उसके साथ बहुत बड़ा झगड़ा हो गया।" जो बात देव को परेशान कर रही थी उसने वह बात मम्मी को बता दी।

मम्मी ने देव के सिर पर हाथ फेरा और उसे सोफ़ा पर शांति से बिठाया, "मैं थाली परोसकर ला रही हूँ, फिर हम खाना खाकर शांति से बातें करेंगे।"

रसोई मे जाकर मम्मी ने देव को आवाज़ लगाई, "बेटा, जल्दी आ, यह पकड़ना तो।" देव दौड़कर रसोई में आया तो मम्मी ने उसे जली हुई दियासलाई थमा दी।

"इसका क्या करूँ?" जलती हुई दियासलाई हाथ में लेकर देव ने पूछा।

"कूड़ेदान में फेंक दे।" मम्मी ने कहा।

देव को आश्चर्य हुआ। उसने फूँक मारकर दियासलाई बुझाई और कूड़ेदान में फेंक दी।

"बेटा, तूने दियासलाई जलते हुए भाग से क्यों नहीं पकड़ी और उसे बुझाकर ही कूड़ेदान में फेंकी?" मम्मी ने पूछा।

एक सेकंड भी सोचे बिना देव ने जवाब दिया, "जलते हुए भाग से पकड़ता तो मैं जल जाता! और जलती हुई फेंक देता तो सारा कूड़ादान जल जाता। इसलिए बुझाकर ही डाली जाती है न! आपने ही तो मुझे ऐसा सिखाया है, मम्मी।"

"एक्जेक्टली बेटा। झगड़ालू व्यक्ति भी दियासलाई की तरह जल रहा होता है। और इसलिए ही वह दूसरों को जला देता है।"

"सचमुच ऐसा होता है मम्मी?" देव को आश्चर्य हुआ।

"हाँ, बेटा। और झगड़ने से क्या फायदा होता है? शायद टेंपरेरी हमारी मनमानी हो जाए, लेकिन वास्तव में देखने जाएँ तो भयंकर नुकसान ही होता है! छोटे-छोटे झगड़े ही आगे चलकर बड़ा महाभारत का रूप लेते हैं!"

वीर के साथ हुआ झगड़ा देव के मन में चल रहा था। खाना खाने के बाद रोज़ की तरह रात को उसने मम्मी से कहा, "मम्मी, स्टोरी टाइम।"

और मम्मी ने कहानी शुरू की, "अजयसिंह और विजयसिंह नामक दो राजकुमार पक्के दोस्त थे। दोनों गुरुकुल में पढ़ाई कर रहे थे। वे गुरुजी के साथ विद्याभ्यास करते और आश्रम के कामकाज में गुरु माता की मदद करते।

एक दिन गुरु माता ने अजयसिंह को सरोवर से पानी लाने का और विजयसिंह को जंगल से लकड़ियाँ लाने का काम सौंपा। विजयसिंह को चित्रकारी का बहुत शौक था। उसे सरोवर के किनारे बैठकर प्राकृतिक चित्र बनाने में बहुत मज़ा आता था। अजयसिंह को इस बात का पता था।

विजयसिंह को निराश देखकर अजयसिंह ने उसे एक सुझाव दिया, "विजय, तू एक काम कर। तेरी चित्रकारी का सामान ले ले और मेरे साथ सरोवर चल। मैं पानी भरूँगा और तू चित्र बनाना।"

"तेरा सुझाव तो अच्छा है लेकिन जो लकड़ी लानी है उसका क्या करेंगे?" विजयसिंह ने पूछा।

अजयसिंह ने कहा, "तू उसकी चिंता मत कर! मैं अपना काम पूरा करने के बाद तेरा काम भी पूरा कर दूँगा। तू शांति से चित्र बनाना।"

विजयसिंह खुश हो गया। दोनों दोस्त सरोवर के किनारे पहुँचे। अजयसिंह अपने काम में लगा गया और विजयसिंह चित्र बनाने में डूब गया।

अब हुआ ऐसा कि जब अजयसिंह पानी भरकर आश्रम पहुँचा तब गुरु माता ने उसे रसोई के काम में लगा दिया। अँधेरा होने पर विजयसिंह आश्रम पहुँचा। उसने देखा कि उसका काम नहीं हुआ है और अजयसिंह गुरु माता को काम में मदद करवा रहा है। विजयसिंह को देखकर गुरु माता ने डाँटा, "इस अजय को देख। उसे सौंपा हुआ काम पूरा करके वह मेरी दूसरे कामों में मदद करवा रहा है। और तूने सुबह से एक काम भी पूरा नहीं किया,"

विजयसिंह को बहुत आघात लगा। एक तो गुरु माता से डाँट पड़ी और ऊपर से आश्रम के अन्य बच्चे उसे कामचोर कहकर चिढ़ाने लगे। उस शाम विजयसिंह और अजयसिंह का बहुत झगड़ा हुआ।

विजयसिंह अजयसिंह पर आँधी की तरह बरस पड़ा, "मैंने सपने में भी नहीं सोचा था मेरा पक्का दोस्त मेरे साथ खेल खेलकर मुझे नीचा दिखाएगा। खुद को अच्छा दिखाने के लिए तूने मेरे साथ ऐसा विश्वासघात किया?" गुस्से में विजयसिंह ने बहुत कुछ बोला।

वियजसिंह की कड़वी बातें सुनकर अजयसिंह भी गुस्से में आ गया। "तू मुझ पर ऐसा आक्षेप नहीं लगा सकता। मैंने कोई विश्वासघात नहीं किया है। संयोगवशात, मैं तेरा काम नहीं कर पाया। गुरु माता को मना नहीं कर पाया। तुझे दुःख देने का मेरा कोई इरादा नहीं था। मुझे समझने की कोशिश तो कर।"

लेकिन विजयसिंह कुछ भी सुनने के लिए तैयार नहीं था। उस दिन सालों की गहरी दोस्ती में बड़ी दरार पड़ गई। दोनों की फ्रेंडशिप टूट गई।

गुरुकुल की पढ़ाई पूरी करने के बाद दोनों राजकुमार अपने-अपने राज्य के राजा बन गए।

एक दिन विजयसिंह का छोटा राजकुमार सुजीतसिंह पिता के पास आया और शिकायत करने लगा, "पिताजी, आपने मुझे वचन दिया था कि मेरे जन्मदिन पर आप मुझे और मेरे दोस्तों को राज्य के पर्यटन पर ले जाओगे। जन्मदिन आकर चला गया। लेकिन आप व्यस्त रहे और मेरे दोस्तों के सामने मेरी नाक कट गई।"

विजयसिंह ने अपने बेटे को समझाने का प्रयत्न किया, "बेटा, मुझे वचन याद था लेकिन राज्य का ज़रूरी काम आने की वजह से उस दिन मैं तुम लोगो को नहीं ले जा सका। फिर कभी ले जाऊँगा।"

पुत्र तो खुश होकर चला गया लेकिन वहाँ उपस्थित राजमाता ने धीरे से इशारा किया "तो क्या राजाजी, संयोगवशात काम नहीं हुआ, उसके लिए आपके बेटे को आपके साथ झगड़ा करना चाहिए? सालों पहले आपके दोस्त ने वचन का पालन नहीं किया, उसमें आपने तो उसके साथ झगड़ा कर लिया था, सही है न?"

राजमाता के मुख से यह बात सुनकर विजयसिंह को सालों पहले अपने दोस्त अजयसिंह के साथ हुआ झगड़ा याद आ गया और उसे अपनी भूल समझ में आई।

ज़रा भी देर किए बिना दिल में अत्यंत दु:ख के साथ विजयसिंह अपने पुराने दोस्त के साथ सुलह करने निकल पड़ा।

देव को शांति लगी। उसने उत्सुकता से पूछा, "अर्थात्, वे लोग फिर से फ्रेंड्स बन गए?"

मम्मी ने प्रेम से देव के सिर पर हाथ फेरा "हाँ,...एकदम खास फ्रेंड्स! इतने खास कि फिर कभी उनके बीच कोई झगड़ा नहीं हुआ।"

"कभी नहीं?" देव को आश्चर्य हुआ।

"नहीं...कभी नहीं," मम्मी ने हंसकर कहा, "बेटा, यदि झगड़े में जीत जाते हैं तो उस व्यक्ति को हार जाते हैं। लेकिन झगड़े में हारकर व्यक्ति को जीत लेते हैं। तो यह सौदा नुकसान वाला तो नहीं कहा जाएगा...सही है न?"

थोड़ा सोचकर, देव ने "हाँ" कहा।

"और तू ही सोच," मम्मी ने आगे कहा, "झगड़ा ज्यादा महत्वपूर्ण है या हमारा दोस्त और उसकी दोस्ती? तू यदि अपने दोस्त वीर की दोस्ती की कीमत समझता है तो उसकी बात शांति से समझने की कोशिश कर। झगड़ा तो किसी बात का सॉल्यूशन हो ही नहीं सकता। तुझे तय करना है कि तुझे हारकर जीतना है या जीतकर हारना है?"

देव ने मन ही मन अपना निर्णय ले लिया और मम्मी से लिपट गया।

मैगनेट्स

स्कूल का पहला दिन था, क्लासरूम के बाहर अपने साइंस लैब पार्टनर का नाम पढ़कर आदित्य चौंक गया।
ओह नो! जिसके साथ मैं बात भी नहीं करता, उसके साथ पूरे साल प्रयोग किस तरह करूँगा?
दो हफ्ते पहले आदित्य को वीर का पार्टनर बनना बहुत अच्छा लगता... लेकिन यह तो तब की बात थी जब वे दोनों बेस्ट फ्रेंड्स थे और तब झगड़ा नहीं हुआ था।
आदित्य क्लासरूम में अपने पार्टनर वीर के पास जाकर बैठ गया। दोनों ने एक दूसरे के सामने देखा भी नहीं।
आज हम मैगनेट्स पर चर्चा करेंगे। पता है, प्राचीन समय में जब जी.पी.एस नहीं था तब दिशा तय करने के लिए किसका उपयोग होता था?

होकायंत्र का...कंपास का।
करेक्ट! पृथ्वी के अंदर रहे चुम्बकीय ध्रुव के कारण होकायंत्र की चुम्बकीय सूई उत्तर-दक्षिण दिशा बतलाती है।
मुझे वीर से पूछे बिना उसकी साइकल नहीं लेनी चाहिए और फिर बरसात में बाहर नहीं रखनी चाहिए थी।
मैगनेट्स का एक खास गुण है कि वे कभी एक दूसरे के पास खिंचते जाते हैं तो कभी दूर जाते हैं।
लेकिन क्या इतनी छोटी सी बात में इतना बड़ा झगड़ा करना ठीक था? एक बार वह भी मुझसे पूछे बिना मेरा बैट ले गया था और तोड़कर वापस लाया था। मैंने तो झगड़ा नहीं किया था।
मैंने तुम सभी को एक बड़ा मैगनेट दिया है। उस मैगनेट के एक तरफ लाल रंग है और दूसरे तरफ भूरा रंग है। अपने मैगनेट की भूरे रंग वाली साइड को अपने पार्टनर की भूरे रंग वाली साइड के साथ मिलाने की कोशिश करो।

बच्चों ने मैगनेट्स को पास लाने का बहुत प्रयत्न किया लेकिन ऐसा संभव नहीं होने पर सभी खिलखिलाकर हँस पड़े।
आदित्य और वीर ने भी प्रयत्न किया। लेकिन न तो उन दोनों ने एक दूसरे के सामने देखा और न ही उन्हें हँसी आई।
यदि वीर के साथ इस तरह फीका व्यवहार रहेगा तो पूरा साल किस तरह निकलेगा? क्या मुझे उसे 'सॉरी' कहना चाहिए?...नहीं...नहीं मैं क्यों सॉरी कहूँ?
देखा, ये मैगनेट्स बहुत जिद्दी होते हैं। जब तक कोई एक मैगनेट मुड़ने के लिए तैयार नहीं होता तब तक दोनों मैगनेट्स को एक दूसरे के पास लाना असंभव है।
अब एक लैब पार्टनर अपने मैगनेट को मोड़कर उसकी लाल रंग वाली साइड अपने पार्टनर की भूरे रंग की साइड के साथ मिलाकर देखे कि क्या होता है?

बच्चों ने ऐसा किया और तुरंत ही दोनों मैगनेट्स एक दूसरे के साथ चिपक गए। अब मैगनेट्स को अलग करना मुश्किल था।
मैं हठीले मैगनेट जैसा कर रहा हूँ। वीर के नज़दीक आने का एक मात्र रास्ता यही है कि मैं मैगनेट की तरह मुड़ जाऊँ और माँफी माँग लूँ। नहीं तो हम दोनों एक-दूसरे से दूर ही रहेंगे।
आई एम सॉरी, दोस्त। बरसात में साइकल की ब्रेक खराब हो गई हो तो...
नहीं यार...ब्रेक बिलकुल भी खराब नहीं हुई है। आई एम सॉरी कि मैंने तेरे साथ इतना बड़ा झगड़ा किया।
उस दिन जब मिस्टर दास ने मैगनेट्स के आकर्षण-विकर्षण का रहस्य समझाया तब दोनों दोस्तों को झगड़ा खतम करने का रहस्य भी समझ में आ गया!

चलो खेलें...

चित्र में छिपे हुए १२ चीज़ों के ढूँढो

इस गणित को सुधारने के लिए सिर्फ १ माचिस की तीली को हटाकर इस पज़ल को सॉल्व करो।

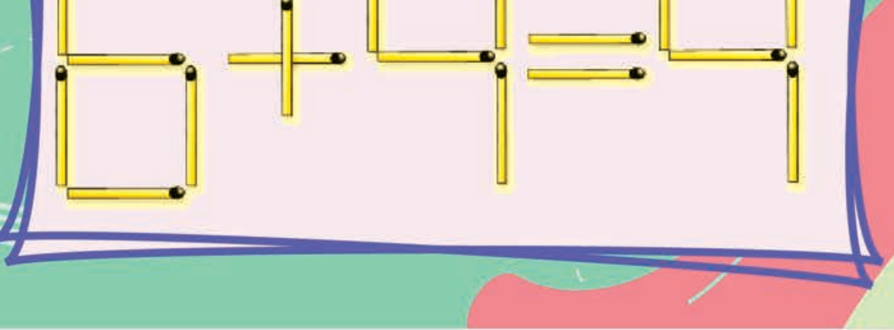

ऐतिहासिक गौरव गाथा

रामायण, महाभारत के महायुद्ध से लेकर आज की दुनिया की लड़ाईयों के मूल में तो महत्वाकाक्षाएँ ही हैं। अधिक प्राप्त करने के लिए या वर्चस्व के लिए की जाने वाली लड़ाई, कई बार बैर का विकराल स्वरूप ले लेती है। और वह बैर, महाविनाशक, मानव भक्षी युद्ध में बदल जाता है। हमारे इतिहास और भूगोल इस बात के साक्षी हैं।

महान सम्राट अशोक की बात करें। मौर्य साम्राज्य के स्थापक चंद्रगुप्त मौर्य और उनके पुत्र बिंदुसार का पुत्र अर्थात् अशोक। बिंदुसार की मृत्यु के बाद अशोक सम्राट बनना चाहता था। बचपन से ही उस पर मनचाहा प्राप्त करने का जुनून सवार रहता था। सत्ता के लिए उसने अपने भाइयों के साथ लड़ाई की और उन्हें मार डाला। अशोक इतना क्रूर और पाशवी प्रकृति वाला था कि 'चंडाशोक' के नाम से कुख्यात हुआ। महल के कर्मचारी भी उससे खरगोश की तरह डरते थे। छोटे से अपराध के लिए वह सेवकों को मौत के हवाले कर देता था। क्रूर ढंग से शिकार करता था। उसने कई लड़ाइयाँ लड़कर विशाल साम्राज्य की स्थापना की थी। उसके लिए एक ही अवरोधरूप राज्य था और वह था, आज का उड़ीसा और प्राचीन काल का कलिंग। कलिंग नंदवंश के पतन के बाद स्वतंत्र हुआ था। वह समृद्ध और गौरवशाली

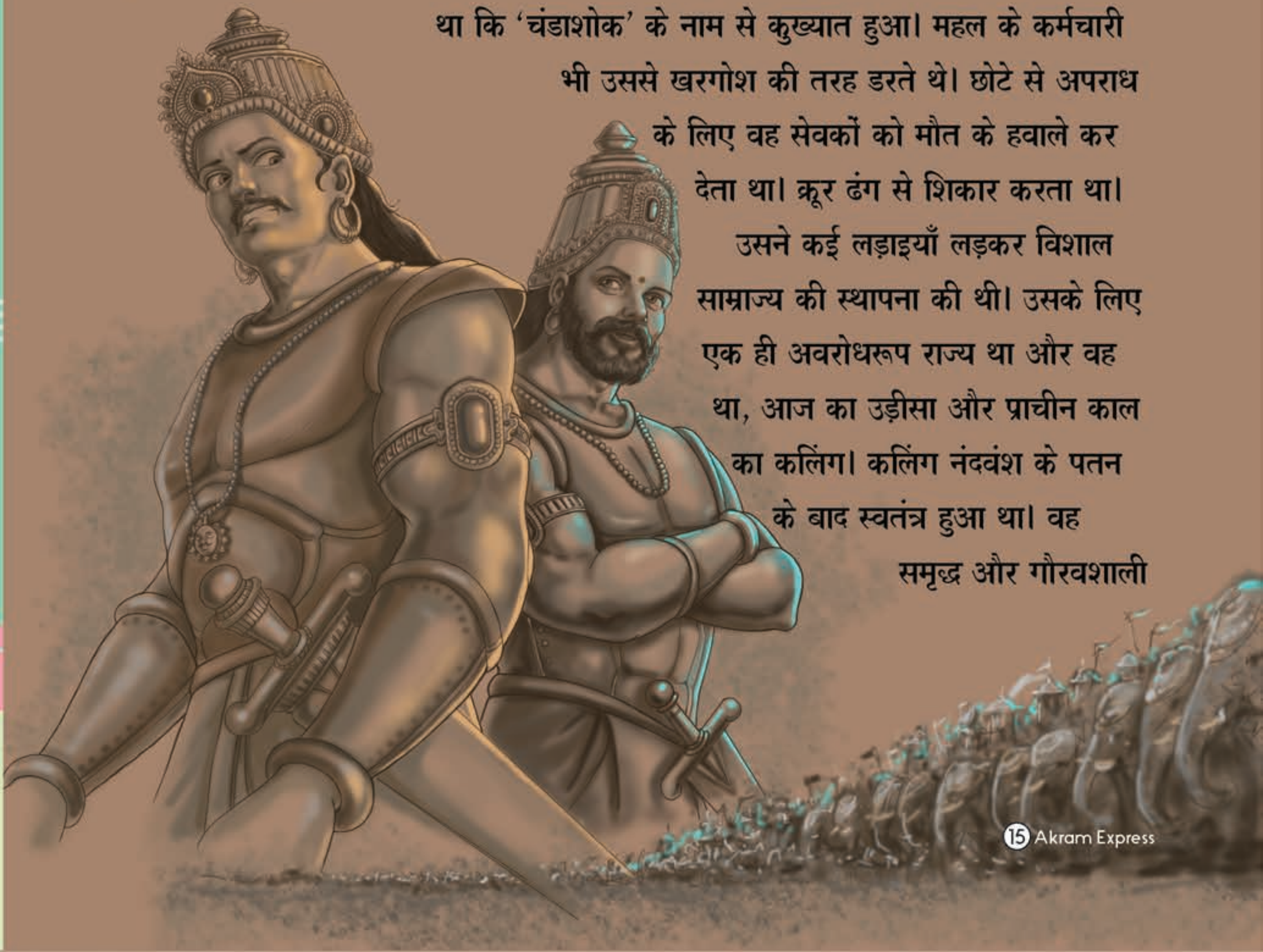

प्रदेश माना जाता था। वहाँ अनंतनाथ नामक राजा राज्य करता था। अशोक के दादा चंद्रगुप्त और पिता बिंदुसार भी कलिंग को मौर्य साम्राज्य में मिला नहीं पाए थे।

विशाल सेना और भव्य तैयारियों के साथ-साथ अशोक की सुबह हुई १ ई.स.पूर्व २६० के साल में कलिंग विजय के लिए उसकी सेना में साठ हज़ार पैदल सैनिक, एक हज़ार अश्वदल, सात सौ गज दल और युद्ध में शत्रुओं में हाहाकार मचा सके ऐसे चुने हुए सेनापति थे। अशोक और कलिंग राज्य के बीच, महानदी और गोदावरी नदी के बीच के प्रदेश में संघर्ष होने वाला था। स्वतंत्रता प्रेमी कलिंग का हर एक व्यक्ति अशोक का सामना करने तैयार था। लेकिन दूसरी ओर अशोक की विशाल सेना और व्यूह रचना भी ज़बरदस्त थी।

कुछ ही घंटों में कलिंग की सेना और आज़ादी का उनका उत्साह खत्म हो गया। युद्ध के मैदान में खून की नदियाँ बहीं। कलिंग के युद्ध में अंदाज़न एक लाख से ज़्यादा सैनिक और हज़ारों सामान्य नागरिक मारे गए। लाखों घायल हुए। डेढ़ लाख सैनिकों को युद्ध बंदी के तौर पर पकड़ा गया। चारों ओर विलाप और शोक का वातावरण छा गया।

युद्ध में विजय पाने के बाद राजा अपनी भव्य विजय को देखने के लिए युद्ध के मैदान में जाते हैं। वैसे ही अशोक भी अपने स्वप्निलविजय को प्रत्यक्ष देखने युद्ध के मैदान में गए।

लेकिन यह क्या? युद्ध के मैदान की स्थिती देखते ही उनका आनंद शोक में परिवर्तित हो गया। क्योंकि जगह-जगह पर उन्हें कटे हुए अंग-उपांग और लाशें नज़र आईं। खोए हुए अनाथ बच्चे रोते-रोते इधर-उधर भटक रहे थे। पुत्र विहीन माताएँ, पति विहीन पत्नियाँ और भाई विहीन बहनें कल्पांत कर रहीं थीं। उनके रुदन ने अशोक को विचलित कर दिया।

इतने में एक महिला अशोक के बिल्कुल नज़दीक आकर कहने लगी, "युद्ध में मेरे पिता, पति और पुत्र तीनों वीरगति को प्राप्त हुए हैं। अब मेरे जीने के लिए कोई कारण नहीं रहा है। इसलिए मुझे भी मृत्युदान दो!"

यह सुनकर अशोक का रहा-सहा उन्माद भी खत्म हो गया। उसके मन में एक ही प्रश्न उठ रहा था कि यह सब किसके लिए?

युद्ध के मैदान से लौटे हुए अशोक बदले हुए अशोक थे। तब उनकी उम्र चौवन (५४) साल थी।

युद्ध के बाद शस्त्र छोड़कर अशोक धोली की पहाड़ी में विश्राम कर रहे बौद्ध साधु उपगुप्त से मिले। उपगुप्त और बौद्धधर्म के निरंतर सम्पर्क से उन्होंने आत्मरक्षा के अलावा युद्ध नहीं करने

का निश्चय किया। 'चंडाशोक' अब 'धर्माशोक' बना। उनका दिग्विजय का युग खत्म हो गया। अशोक के साम्राज्य में आध्यात्मिक और धर्मविजय के नए युग की शुरुआत हुई। कलिंग के युद्ध ने सिर्फ अशोक को ही नहीं, भारत के इतिहास और भविष्य को भी बदल डाला।

कलिंग के युद्ध के बाद अशोक ने शाकाहारी जीवन शैली को अपनाया। उन्होंने बौद्धधर्म के प्रचार-प्रसार में भी कोई कमी नहीं छोड़ी। अपनी संतान, महेंद्र और संघमित्रा को बोधी वृक्ष की डाली लेकर सिलोन में बौद्ध धर्म के प्रचार के लिए भेजा। आज विश्व में जहाँ भी बौद्ध धर्म दिखता है उसकी नींव में अशोक के प्रयत्न समाए हुए हैं। सच्ची विजय लोगों के हृदय जीतने में है, न कि लड़ाई जीतने में! बाकी लड़ाइयों से तो दिग्विजयी महान सम्राट अशोक को भी शोक ही मिला।

मीठी यादें

जब भी यात्रा होती तब सेवा के हर एक डिपार्टमेंट के आधे लोग ही जाते और बाकी के आधे लोग डिपार्टमेन्ट संभालते। अगले साल बाकी के आधे लोग यात्रा में जाते और जो पहले गए थे वे लोग डिपार्टमेन्ट संभालते। ब्रह्मचारी भाई-बहनों के लिए पूज्य नीरू माँ ने ऐसा सेट किया था, जिससे यहाँ काम भी चलता रहे और बारी-बारी से सभी को यात्रा में जाने मिले। सभी डिपार्टमेन्ट अपनी-अपनी लिस्ट भेजते, फिर वह लिस्ट नीरू माँ के पास जाती। नीरू माँ खुद देखते कि कौन आ रहा है और कौन नहीं। उसमें नीरू माँ को कहीं कुछ बदलने जैसा लगता तो वे ऐसा करते, जैसे कि इसके बदले इसे लेना है, आदि। यानी फाइनल डिसीजन नीरू माँ लेते कि किसे ले जाना है और किसे नहीं।

इसी तरह २००५ में काश्मीर की यात्रा से पहले बहनों का लिस्ट तैयार होकर नीरू माँ के पास गया। उन्होंने सभी डिपार्टमेन्ट का देखा। उसमें उणोदरी का नाम आया। तब उणोदरी में चार ब्रह्मचारी बहनें सेवा में थीं। उनमें से दो नाम के आगे टिक किया हुआ था कि ये दो आएगी। नीरू माँ ने बाकी दो नामों के सामने भी टिकमार्क कर दिया।

और कहा, 'इन चारों को ले जाना है। ये लड़कियाँ गर्मी में दिन भर, धूप में टीन के शेड के नीचे काम करती हैं, तो इन लोगों को बर्फ में ले चलते हैं। काश्मीर की ठंडी में।'

यों भले ही नीरू माँ नियम बनाते लेकिन उसका अनुसरण करते समय सभी संयोगों को हर तरफ से देखते और पूर्ण जाँच के बाद ही निर्णय लेते।

ऐसे प्रेक्टीकल थे नीरू माँ!!!

The Little Chef

चॉकलेट कोकोनट बोल्स

आवश्यक सामग्री :-

सूखा नारियल का चूरा - 1 कप

दूध - 1 कप

शक्कर - ¼ कप

कोको पावडर - 1 टी. स्पून

घी - 1 टी. स्पून

बनाने का तरीका :-

- सभी चीज़ों को एक कढ़ाई में मिलाकर गैस पर रखें।
- मध्यम आंच पर मिश्रण को गाढ़ा होने तक लगातार चलाते रहें।
- बोल बनाए जा सकें वैसे हो जाएँ तो गैस से नीचे उतारकर एक प्लेट में निकालकर ठंडा होने के लिए रख दें।
- ठंडा होने पर उसके छोटे-छोटे बोल्स बनाकर सुखे नारियल के चूरे पर गोल-गोल घुमाँ दें।

दीपावली के त्यौहार का मज़ा लेने के लिए तैयार है चॉकलेट कोकोनट बोल्स। तो आप स्वयं बनाकर, सबको खिलाओगे न?

चित्र में छिपे हुए १ २ चीज़ों के ढूँढो

चलो खेलें का जवाब :

इस गणित को सुधारने के लिए सिर्फ १ माचिस की तीली को हटाकर इस पज़ल को सॉल्व करो।

Akram Express
November 2020
Year : 8, Issue : 7
Conti. Issue No.: 92

BALVIGNAN

Date of Publication On 8th Of Every Month
RNI No.GUJHIN/2013/53111

दादा भगवान की ११३ वीं जन्म जयंती

के अवसर पर, बच्चों के लिए आयोजित की जा रही है, एक **SPECIAL QUIZ CONTEST**, जिसका नाम है, 'दादा के साथ धमाल' तो हो न तैयार **WINNER** बनने के लिए?

जो **QUIZ** का **WINNER** होगा उसे मिलेगा पूज्यश्री के हाथों **GIFT!!**

QUIZ!

1ST ROUND - 7 & 8 नवम्बर
2ND ROUND - 17 & 18 नवम्बर
3RD ROUND - 27 & 28 नवम्बर

तो दादा भगवान सचित्र बुक भाग १ से ६ पढ़कर हो जाओ, तैयार!

अक्रम एक्सप्रेस के सदस्यों के लिए सूचना

१. आपकी वार्षिक सदस्यता समाप्त हो रही है उसका पता कैसे चलेगा? यदि आपकी इस महीने में आई हुई अक्रम एक्सप्रेस के कवर के लेबल पर लगे हुए मेम्बरशीप नं. के बाद # हो तो यह आपकी अंतिम अक्रम एक्सप्रेस है। उदा. **AGIA4313#** और यदि लेबल पर मेम्बरशीप नं. के बाद ## हो तो अगले महीने में आपकी सदस्यता समाप्त होगी। उदा. **AGIA4313##** अक्रम एक्सप्रेस रिन्यूअल की जानकारी संपादकीय पेज पर दी गई है।

२. यदि किसी महीने का अक्रम एक्सप्रेस आपको नहीं मिला हो तो नीचे दी गई माहिती फोन नं. ८१५५००७५०० पर SMS करें।

१. कच्ची पावती नंबर या ID No., २.पूरा ऐड्रेस पिन कोड के साथ, ३. जिस महीने का मैगेज़ीन नहीं मिला हो, उस महीने का नाम।

Publisher, Printer & Editor - Dimple Mehta on behalf of Mahavideh Foundation
Printed at Amba offset :- B-99 GIDC, Sector - 25, Gandhinagar - 382025